रीता निगम
शोधार्थी – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा (म0प्र0)

''रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का अध्ययन''

सारांश – ''रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का अध्ययन'' प्रस्तुत शोध कार्य रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड के ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत/सेवारत शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के अध्ययन पर आधारित हैं। शिक्षक डिजिटल/कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त होने से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के ज्ञान एवं कौशल के विकास का स्तर उच्च रहेगा। शोधार्थी ने शोध कार्य के संदर्भ में चयनित न्यादर्शो एवं उपकरणों, शोध विधियों का प्रयोग कर निर्मित परिकल्पना के आधार पर ऑकड़ों का एकत्रीकरण कर उनका सारणीयन, विश्लेषण किया एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन एवं निरसन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शोध क्षेत्र के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत/सेवारत शिक्षकों के कुल प्रतिदर्शो में से 17.8% शिक्षक उच्च स्तरीय डिजिटल/कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त किए है, जबकि 53.3% के मतानुसार डिजिटल आधारित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का स्तर निम्न स्तरीय हैं वहीं अगर रीवा जिले के शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षक, कुल प्रतिदर्शो में से 71.1% के मतानुसार विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं, जबकि 28.9% के मतानुसार विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कम्प्यूटर या डिजिटल आधारित योग्यता/प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया हैं। अतः यह कहा जा सकता हैं कि शहरी क्षेत्रों के अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों के कार्यरत शिक्षकों में डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता का स्तर न्यून है इसलिए विद्यालयों के संस्था प्रमुखों का दायित्व हैं कि कार्यरत शिक्षकों को डिजिटल प्रशिक्षण प्रदान कराए।

मुख्य शब्द – रीवा जिला, ग्रामीण, शहरी, क्षेत्र, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, कार्यरत शिक्षक, डिजिटल, योग्यता।

प्रस्तावना –''जरूरी नही रोशनी चरागों से ही हो, शिक्षा से भी घर रौशन होते हैं।'' शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो हमें ज्ञान, उच्चतम सोच और सकारात्मकता की ओर आगे बढ़ाता हैं। शिक्षा द्वारा मानव अपना समग्र विकास करता है, शिक्षा से ही मनुष्य अपने आदर्शो, आकांक्षाओं, आशाओं, विश्वास, परम्परा तथा सांस्कृतिक विरासत को विकसित कर सकता हैं।

''शिक्षा स्वयं की अनुभूति है।'' **————श्री अरबिन्द घोष**[1]

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है, भारत में बच्चों को निम्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती हैं, जिसका स्वरूप इस प्रकार से हैं –

1. पूर्व प्राथमिक, 2. प्राथमिक विद्यालय, 3. मिडिल विद्यालय, 4. माध्यमिक विद्यालय,
5. उच्च माध्यमिक विद्यालय।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्र किशोरावस्था के होते है इसलिए इस अवस्था का महत्व और भी बढ़ जाता है, वर्तमान में छात्र नवीन तकनीकों एवं उपकरणों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करता है एवं ज्ञानार्जन में वृद्धि करता है। विद्यालयों के संस्था प्रमुखों, शिक्षकों के द्वारा इन माध्यमों का उपयोग करके छात्रों के अधिगम कौशल का विकास किया जा रहा है, शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है, डिजिटल यंत्रों के अंतर्गत–ई–बुक्स/डिजिटल बुक्स, कम्प्यूटर्स, टेलीविजन, मोबाइल फोन, रेडियों, आई पॉड्स, कैमरा, ई–लर्निंग, टैबलेट, ई–मेल, ऑनलाइन चैटिंग आदि शामिल है इन माध्यमों को उपयोग करने का प्रशिक्षण भी लोगों को प्रदान किया जाता है, शिक्षकों को इन माध्यमों के उपयोग की कौशलता प्राप्त करना आवश्यक हैं।

अगर शिक्षक इन उपकरणों का प्रशिक्षण प्राप्त किए होंगे तो छात्रों के ज्ञान एवं कौशलों का विकास कर सकेंगे, इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक पूर्ण रूप से अध्यापन के क्षेत्र में दक्ष हो। यह अत्यावश्यक है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक डिजिटल आधारित योग्यता/प्रशिक्षण प्राप्त हो जिससे छात्रों के अधिगम में आने वाली कठिनाईयों का समाधान कर सके।

शोध अध्ययन की आवश्यकता – शिक्षा मानव की अभिवृत्तियों को अपनाने और कौशल प्रदान करने की प्रक्रिया है, शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तकनीकों उपकरणों के माध्यम से छात्रों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करने हेतु शिक्षकों को डिजिटल आधारित योग्यता/प्रशिक्षण प्राप्त किया होना आवश्यक है। आज शिक्षा का स्तर बढ़ गया हैं, पाठ्यक्रमों में नवीनता आई है, डिजिटलीकरण के कारण छात्रों के समक्ष नवीन कठिनाइयॉ आ रही है, इसलिए बदलते परिवेश के कारण शिक्षकों को भी 'डिजिटल साक्षरता' की आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य **''रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का अध्ययन''** पर आधारित हैं, जिसके अंतर्गत रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालय संस्था प्रमुख, शिक्षक, कक्षा 9 एवं 10 के अध्ययनरत विद्यार्थी हैं, इन विद्यार्थियों द्वारा अत्यधिक डिजिटल संसाधनों का उपयोग किया जाता हैं, शोधार्थी के उनके अध्यापकों में डिजिटल साक्षरता हैं या नहीं वो छात्रों की डिजिटल संबंधी समस्या का निराकरण कर पाएंगे, छात्रों में रचनात्मकता आ सकेगी, वो छात्रों का सहयोग करने में सक्षम हैं, इन सभी तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा से शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया।

शोध का महत्व– प्रत्येक शोध कार्य का अपना विशेष महत्व होता है, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कक्षा शिक्षकों के द्वारा छात्रों के विषय संबंधी कठिनाइयों का निवारण में सहयोग करते है, उनके द्वारा डिजिटल संसाधनों का उपयोग अध्यापन में किया जा रहा है, शिक्षक डिजिटल आधारित प्रशिक्षण प्राप्त किए है इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन के महत्व का निर्धारण किया गया है–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता ज्ञात हो सकेगी।

2. शोध क्षेत्रान्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के डिजिटल योग्यता के स्तर का अध्ययन हो सकेगा।

3. शोध क्षेत्र के शिक्षकों द्वारा डिजिटल संसाधनों के उपयोग का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य – शिक्षा अनुसंधान में समस्या चयन के साथ ही उद्देश्यों का निर्धारण उस समस्या के निदान हेतु कार्य योजना का निर्धारण हो जाता है, प्रस्तुत शोध कार्य के निर्धारित उद्देश्य इस प्रकार से हैं –

1. शोध क्षेत्रान्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले डिजिटल संसाधनों का अध्ययन करना।

2. शोध क्षेत्रान्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना।

3. शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता प्रशिक्षण के स्तर का अध्ययन।

शोध परिकल्पना – अनुसंधान कार्य में चयनित समस्या के उपरांत उद्देश्य निर्धारण के बाद समस्या का अस्थायी समाधान या परीक्षणीय प्रस्ताव प्रस्तुत करना पड़ता है, यही परीक्षणीय प्रस्ताव को ही अनुसंधान की भाषा में परिकल्पना कहा जाता है, क्योंकि परिकल्पना के बिना शोध कार्य की पूर्णता असम्भव हैं।

''परिकल्पना किसी सिद्धांत का वह रूप हैं जिसे एक परीक्षण योग्य, तर्क योग्य साध्य के रूप में लिखते है और जिसकी स्पष्ट रूप से प्रदत्तों के आधार पर या प्रयोगात्मक निरीक्षकों के आधार पर पुष्टि की जा सकती हैं।'' **———— एम॰ वर्मा [2]**

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी के चयनित समस्या के अंतर्गत पूर्ववर्ती शोध कार्यो के अध्ययन उपरांत परिकल्पनाओं को निरूपित किया –

1. शोध क्षेत्रान्तर्गत ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का स्तर सामान्य हैं।
2. शोध क्षेत्रान्तर्गत शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का स्तर उच्च हैं।

शोध क्षेत्र का परिसीमन – शोध क्षेत्र की सीमाएँ समय, साधन एवं सुविधाएं निश्चित करती है, शोध क्षेत्र के परिसीमन को उस भू–भाग के विस्तार निर्धारण में सहायता प्राप्त होती है, जिसकी निश्चित परिसीमा में चयनित समस्या का अध्ययन करना होता हैं।

1. भौगोलिक परिसीमन – प्रस्तुत शोध कार्य में ''रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का अध्ययन।'' के अंतर्गत शोध को भौगोलिक रूप से रीवा जिले की राजस्व सीमा का परिसीमित किया हैं।

2. विषयवस्तु का परिसीमन – प्रस्तुत शोध कार्य में विषय वस्तु के परिसीमन के अंतर्गत रीवा विकासखण्ड के ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों एवं उनके संस्था प्रमुखों, शिक्षकों तक परिसीमित किया जाता हैं।

शोध विधि – यह अनुसंधान क्रिया को संपादित करने का एक सही तरीका है, जो समस्या की प्रकृति के अनुसार निर्धारित होती है। प्रस्तुत शोध समस्या **''रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के**

अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का अध्ययन।'' प्रस्तुत अध्ययन में चरों की प्रकृति के अनुसार **'सर्वेक्षण विधि'** का उपयोग किया गया हैं।

शोध उपकरण –

किसी शोध कार्य में समस्या चयन के पश्चात् निर्मित की गई परिकल्पना के परीक्षण हेतु ऑकड़ों का संग्रहण करने के लिए जिन माध्यमों का उपयोग किया जाता है उसे शोध उपकरण कहते हैं। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों का संकलन करने के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया हैं –

1. संस्था प्रमुखों के लिए प्रश्नावली प्रपत्र।
2. शिक्षकों के लिए प्रश्नावली प्रपत्र।

न्यादर्श – शैक्षिक अनुसंधान में न्यादर्श का महत्वपूर्ण स्थान है, न्यादर्श के अभाव में शोध कार्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। न्यादर्श ही शोध कार्य की आधारशिला है। न्यादर्श एक बहुत बड़े समूह का छोटे समूह के चुने जाने की प्रक्रिया है, जबकि छोटा समूह ''न्यादर्श'' तथा बड़ा समूह ''समग्र'' होता है।

शोधार्थी ने रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड अंतर्गत रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रमुख एवं कार्यरत शिक्षकों को चयनित किया गया है।

रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का न्यादर्श विवरण इस प्रकार से है –

तालिका क्रमांक – 01

क्र॰	जिले का नाम	विद्यालयों की संख्या		माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रमुख		माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकगण	
		ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी
1	रीवा (म॰प्र॰)	15	15	15	15	30	30

पूर्ववर्ती शोध साहित्य का अध्ययन –

पूर्ववर्ती शोध अध्ययन से तात्पर्य शोध समस्या से संबंधित उन पूर्ववर्ती शोध अध्ययन से है जिनके अध्ययन से शोधार्थी को शोध समस्या के चयन, क्षेत्र का चयन, परिकल्पना का निर्माण तथा शोध कार्य की रूपरेखा तैयार करने में मदद मिलती है। शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या के पूर्व में किए गए शोध कार्यो के अध्ययन उपरांत प्रस्तुत निम्न बिन्दु निम्नानुसार है –

1. शोध शीर्षक – ''प्रारंभिक शिक्षा के गुणात्मक विकास कम्प्यूटर/डिजिटल संसाधनों का समीक्षात्मक अध्ययन।'' (हेड स्टार्ट योजना के संदर्भ में)

शोधार्थी – **श्री जगप्रसाद वर्मा (2003–04)**

शा0 शिक्षा महाविद्यालय, रीवा (म॰प्र॰)

शोध उद्देश्य – 1. हेड स्टार्ट जन शिक्षा केन्द्रों में कम्प्यूटर समर्पित शिक्षा की शैक्षणिक उपयोगिता का अध्ययन करना।

2. अभिलेखों के रख–रखाव एवं कार्यालयीन कार्यो में कम्प्यूटर/डिजिटल संसाधनों की उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध निष्कर्ष – 1. शैक्षणिक सामग्री के रूप में कम्प्यूटर/डिजिटल संसाधनों की अत्यधिक उपयोगिता है।

2. अभिलेखों के रख–रखाव एवं कार्यालयीन कार्यो में डिजिटल संसाधनों की उपयोगिता बहुत अच्छी है।

2. शोध शीर्षक – "A study of effect of media on student learning."

शोधार्थी – एम॰ परिहार (1994)

उद्देश्य – छात्रों के अधिगम पर मीडिया के प्रभाव का अध्ययन।

2. विद्यालयों के शिक्षकों के डिजिटल माध्यमों के उपयोग की दक्षता का अध्ययन।

निष्कर्ष :– 1. न्यादर्श चयनित 20 विद्यालयों में से केवल 4 विद्यालयों में School T.V. Programme का उपयोग होता है लेकिन ऑडियो, वीडिया, केसेट्स का उपयोग नहीं होता।

2. विद्यालयों में डिजिटल संसाधनों प्रशिक्षित शिक्षकों का उपयोग School T.V. Programmes के लिए नहीं होता था।

तथ्यों का सारणीयन विश्लेषण एवं व्याख्या– किसी शोध कार्य के अंतर्गत ऑकड़ों का संकलन, चयनित उपकरणों का प्रशासन न्यादर्श की इकाईयों पर किया जाता है, शोधार्थी का कोई भी शोध कार्य तभी प्रतिबिम्बित होता है जब प्राप्त तथ्य क्रमबद्ध रूप से सारणीयन एवं वर्गीकृत हो एवं उनकी सांख्यिकीय विवेचना के आधार पर पुष्टि संभव हो सके।

''सारणीयन किसी विचाराधीन समस्या को स्पष्ट करने के उद्देश्य संख्यात्मक तथ्यों के क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने की एक विधि हैं।'' ————**कार्नर**[5]

तालिका क्रमांक– 02

क्र.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्श की संख्या	संगत प्रश्न	ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन					
				उच्च		सामान्य		निम्न	
				संख्या	प्रतिशत्	संख्या	प्रतिशत्	संख्या	प्रतिशत्
1	**संस्था प्रमुख**	15	14ए15	02	13ण्3:	5	33ण्3:	8	53ण्4:
2	**शिक्षक**	30	14ए15	06	20:	8	26ण्7:	16	53ण्3:
कुल योग		**45**		**8**	**17ण्8:**	**13**	**28ण्9:**	**24**	**53ण्3:**

विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका क्रमांक 02 में ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु स्वयं अनुसंधानकर्ता ने जानकारियों को न्यादर्श में चयनित संस्था प्रमुखों, शिक्षकों द्वारा संकलित कर विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषित तथ्यों के संदर्भ में 13ण्3: संस्था प्रमुखों, 20: शिक्षकों के मतानुसार शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है जो उच्च स्तरीय है तथा 33.3: संस्था प्रमुखों एवं 26.7: शिक्षकों द्वारा सामान्य स्तरीय डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है। जबकि 53ण्4: संस्था प्रमुखों एवं 53ण्3: शिक्षकों के मतानुसार ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा निम्न स्तरीय कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता प्राप्त किया गया है।

जानकारी संकलन के समस्त स्त्रोतों के कुल प्रतिदर्शो में से 17ण्8: शिक्षकों द्वारा उच्च स्तरीय डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया गया जबकि 53ण्3: के मतानुसार शिक्षकों द्वारा निम्न स्तरीय कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता प्राप्त किया गया है।

व्याख्या :–

उक्त विश्लेषण के आधार पर शोध क्षेत्रान्तर्गत न्यादर्श में चयनित अधिकांश संस्था प्रमुखों एवं अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अधिकांश शिक्षकों द्वारा निम्न स्तरीय डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया गया हैं।

ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन

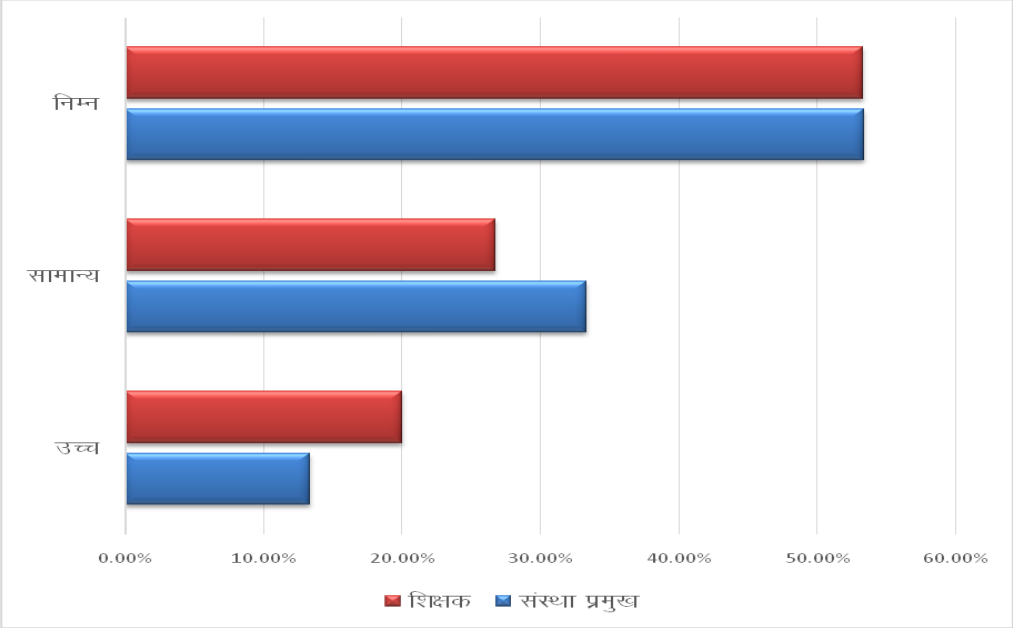

आरेख क्रमांक – 01

तालिका क्रमांक– 03

क्र.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्श की संख्या	संगत प्रश्न	शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन					
				उच्च		सामान्य		निम्न	
				संख्या	प्रतिशत्	संख्या	प्रतिशत्	संख्या	प्रतिशत्

1	संस्था प्रमुख	15	14ए15	10	66ण्7:	05	33ण्3:	.	.
2	शिक्षक	30	14ए15	22	73ण्3:	08	26ण्6:	.	.
कुल योग		**45**		**32**	**71ण्1:**	**13**	**28ण्9:**	.	.

विश्लेषणः–

उपरोक्त तालिका क्रमांक 03 में शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु स्वयं अनुसंधानकर्ता ने जानकारियों को न्यादर्श में चयनित संस्था प्रमुखों, शिक्षकों द्वारा संकलित कर विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषित तथ्यों के संदर्भ में 66ण्7: संस्था प्रमुखों, 73ण्7: शिक्षकों के मतानुसार शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है जबकि 33.3: संस्था प्रमुखों एवं 26.6: शिक्षकों का मानना है कि शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हैं।

जानकारी संकलन के समस्त स्त्रोतों के कुल प्रतिदर्शो में से 71ण्1: के मतानुसार शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है। जबकि 28.9: के मतानुसार शिक्षकों द्वारा कम्प्यूटर/डिजिटल आधारित योग्यता का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया गया है।

व्याख्या :–

उक्त विश्लेषण के आधार पर शोध क्षेत्रान्तर्गत न्यादर्श में चयनित अधिकांश संस्था प्रमुखों एवं शिक्षकों की प्रतिक्रिया के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अधिकांश शिक्षकों द्वारा डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता प्राप्त किया गया हैं।

शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता या प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन

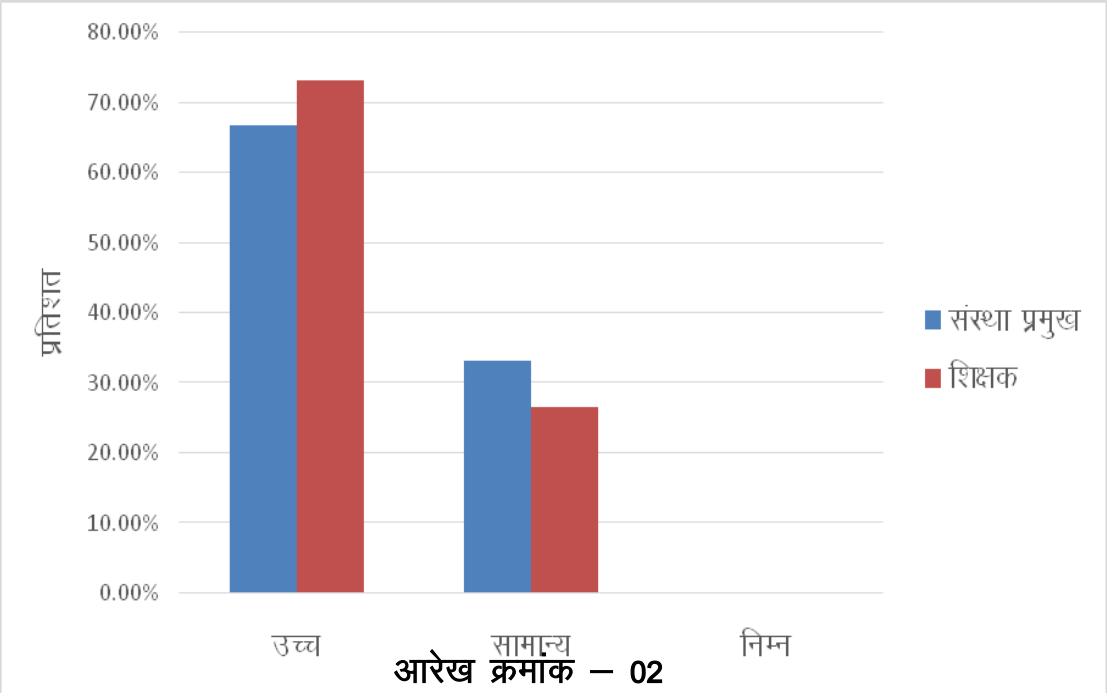

आरेख क्रमांक – 02

परिकल्पना का सत्यापन एवं निरसन

परिकल्पना क्रमांक 01 –

''शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

उक्त परिकल्पना के संदर्भ में तालिका क्रमांक– 02 के संगत तथ्यों के विश्लेषण उपरांत की गई व्याख्या से स्पष्ट होता है कि जनसंचार माध्यमों से अधिगम उपरांत ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः शोधार्थी की उक्त परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक 02 –

''शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

उक्त परिकल्पना के संदर्भ में तालिका क्रमांक– 03 के संगत तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या उपरांत स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता में सार्थक अन्तर हैं।

अतः शोधार्थी की उक्त परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष :– शोधार्थी द्वारा विभिन्न स्त्रोतों के उपयोग करने के उपरांत तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण सारणीयन विश्लेषण एवं व्याख्या की गई, परिकल्पना का सत्यापन एवं निरसन के बाद प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार से हैं –

1. शोध क्षेत्रान्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक डिजिटल योग्यता/प्रशिक्षण प्राप्त का प्रतिशत् सामान्य हैं।
2. शोध क्षेत्रान्तर्गत शहरी क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक डिजिटल योग्यता/प्रशिक्षण का प्रतिशत उच्च हैं।
3. शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में कुल प्रतिदर्शो में से 17.8% शिक्षकों द्वारा उच्च स्तरीय डिजिटल/कम्प्यूटर आधारित योग्यता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया गया हैं। जबकि 28.9% शिक्षकों का डिजिटल आधारित प्रशिक्षण का प्रतिशत सामान्य हैं।

सुझाव :– प्रस्तुत शोध कार्य **''रीवा जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों के शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता का अध्ययन''** अंतर्गत शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत सुझाव निम्नानुसार हैं –

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता/प्रशिक्षण का स्तर बढ़ाया जाना चाहिए।
2. शोध क्षेत्रान्तर्गत ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में डिजिटल/कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति जागरूकता, रूचि को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
3. शोध क्षेत्र के संस्था प्रमुखों को विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों में डिजिटल आधारित योग्यता/प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ॰ अरूणा गुप्ता, डॉ॰ शशिकांत यादव एवं दिनेश अड़ानिया (2017) ''भारत में शिक्षा स्थिति समस्याएँ एवं मुद्दे'' पृष्ठ क्रमांक–15 (प्रथम संस्करण) एफ॰एफ॰ 107, आदर्श कॉम्पलेक्स इंजीनियरिंग कॉलेज चौराहा, इलाहाबाद बैंक के सामने।

2. धीरज कुमार नामदेव (2023)– ''भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति सेवारत शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन'', "Research Journal of Social and Life Science" Vol 39, Year 20 July, Dec-2023 ISSN 0973-3914 Page No. 97, हिन्दी संस्करण –अंक–39, गायत्री प्रकाशन रीवा (म0प्र0)
3. एम॰ए॰ हन्फी एवं शबीना हन्फी (2014–15)– ''मनोविज्ञान में शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी'' पृष्ठ संख्या –145, प्रथम संस्करण, अग्रवाल प्रकाशन 28/115 ज्योति ब्लॉक संजय पैलेस आगरा–2
4. उमाशंकर कुशवाहा (2021)– P.hD. शिक्षा शास्त्र ''किशोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं मानवीय मूल्यों पर सूचना तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन'' पृष्ठ क्रमांक– 127 अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म0प्र0)
5. रोशन जहॉ अंसारी (2020–22)– ''रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं दिनचर्या पर ऑनलाईन कक्षा के प्रभाव का अध्ययन।'' पृष्ठ क्रमांक – 42 शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रीवा (म0प्र0)